

Dr. Rajiv Kumar

History department

H. D jain college, ara

Notes for pg sem 3(cc10)

**बाणभट्ट को प्राचीन भारत का इतिहासकार क्यों कहा जाता है?
विवेचना कीजिए।**

उत्तर:

बाणभट्ट (7वीं शताब्दी ई.) सम्राट हर्षवर्धन के दरबारी कवि और जीवनीकार थे।

उनकी रचना *हर्षचरितम्* भारतीय इतिहास लेखन की प्रथम जीवनीपरक कृति मानी जाती है। इसमें उन्होंने हर्ष के जीवन, शासन, परिवार, समाज और संस्कृति का सजीव चित्रण किया है।

उनका विवरण तथ्यात्मक, कालानुक्रमिक और यथार्थपरक है, जिससे हर्षकालीन भारत की राजनीति, धर्म और संस्कृति का ज्ञान मिलता है।

यद्यपि भाषा अलंकारपूर्ण है, फिर भी उसमें ऐतिहासिक तत्व प्रचुर हैं। इसी कारण बाणभट्ट को “प्राचीन भारत का इतिहासकार” कहा जाता है।

उनकी दो प्रमुख कृतियाँ हैं –

1. *हर्षचरितम्*

2. *कादम्बरी*

इनमें विशेष रूप से *हर्षचरितम्* ऐतिहासिक दृष्टि से अत्यंत महत्वपूर्ण मानी जाती है।

ऐतिहासिक दृष्टि

- *हर्षचरितम्* को भारत की प्रथम राजकीय जीवनी कहा जाता है।
- इसमें बाणभट्ट ने हर्ष के जीवन, राज्य विस्तार, शासन नीति, धार्मिक प्रवृत्तियों और समकालीन समाज का विस्तृत वर्णन किया है।
- यह विवरण कालानुक्रमिक (chronological) एवं यथार्थपरक है, जो इतिहास लेखन का प्रमुख लक्षण है।

सामाजिक एवं सांस्कृतिक चित्रण

- बाणभट्ट ने अपने युग के सामाजिक जीवन, स्त्रियों की स्थिति, शिक्षा, धर्म, उत्सव, और नगर व्यवस्था का वर्णन किया है।

- उन्होंने गंगा-यमुना के दोआब क्षेत्र के नगरों, मठों, और मंदिरों की झाँकी प्रस्तुत की है।

→ इससे उस काल की सांस्कृतिक चेतना का पता चलता है।

साहित्य और इतिहास का संगम

- बाणभट्ट कवि थे, इसलिए उनका इतिहास वर्णन कलात्मक भाषा में है।
- यद्यपि उन्होंने कहीं-कहीं अतिशयोक्ति और अलंकारों का प्रयोग किया, फिर भी उसमें तथ्य निहित हैं।
- उन्होंने कल्पना और यथार्थ का सुंदर समन्वय किया है।

ऐतिहासिक मूल्य

- *हर्षचरितम्* से हर्षकालीन भारत की राजनीति, प्रशासन, समाज, धर्म और संस्कृति की गहरी झलक मिलती है।
- यह ग्रंथ एक प्रकार का सांस्कृतिक-राजनीतिक इतिहास प्रस्तुत करता है।
- बाणभट्ट का दृष्टिकोण दरबारी होते हुए भी वर्णन पर्याप्त तथ्यपरक है।

निष्कर्ष :

काल्हण ने *राजतरंगिणी* में इतिहास को साहित्य से अलग एक स्वतंत्र रूप दिया।

उन्होंने तथ्यों, प्रमाणों और निष्पक्ष दृष्टिकोण के आधार पर इतिहास लेखन की नींव रखी।

इसीलिए उन्हें “भारत का प्रथम वास्तविक इतिहासकार”
कहा जाता है।